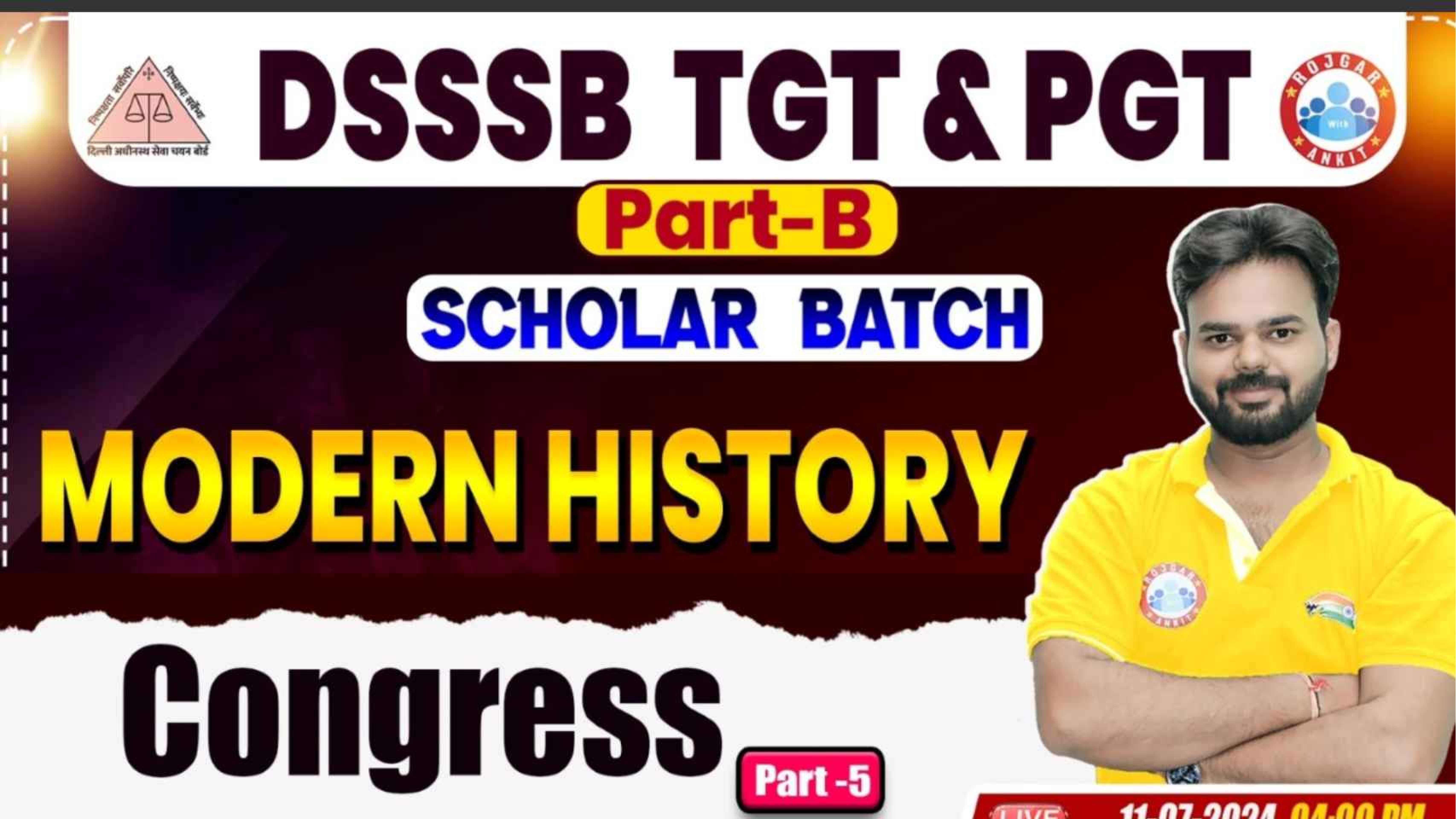

दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड
DSSSB TGT & PGT
ROJGAR With ANKIT
Part-B
SCHOLAR BATCH
MODERN HISTORY
Congress
Part -5

* क्रांतिकारी गतिविधियाँ *

Revision

Modern History

1. 1857 का विद्रोह
2. कांग्रेस एवं अधिवेशन
3. बंगभंग एवं स्वदेशी आंदोलन
4. मार्ले मिंटो सुधार एवं दिल्ली दरबार

1857 की क्रांति

क्रांति – व्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन करना।

अतिविशिष्ट क्यों :-

1) बहुवर्गीयता थी। (किसान, मजदूर, महिला, व्यापारी, छोटे जमीनदार, सैनिक वर्ग)
2) प्रसार क्षेत्र – लगभग सम्पूर्ण उत्तर भारत।
3) अपवाद → बड़े जमीनदारों ने अंग्रेजों का साथ दिया।
→ मध्यमशिक्षित वर्ग तटस्थ रहा।

कारण :-

1) राजनीतिक कारण
2) सामाजिक कारण
3) आर्थिक कारण
4) सैनिक कारण
5) तात्कालिक कारण

राजनीतिक कारण

1) साम्राज्यवादी नीति :-
⇒ राजकोषीय विनियोग का दौर (1757–1813)
⇒ वेलेजली की सहायक संधि
2) डलहौजी की हड़पनीति :-
⇒ अवध पर कुशासन का आरोप (स्लीमन की रिपोर्ट)
⇒ दत्तक पुत्र वैध उत्तराधिकारी नहीं
⇒ नाना साहेब की पेंशन रोकना
3) अंग्रेज मुगलों के उत्तराधिकारी बन गये। 1803 में दिल्ली के किले पर कब्जा कर लिया और ऑक्टरलोनी को वहां का रेजीडेंट बनाया।

अंग्रेजों ने युद्धों, संघर्षों एवं संधियों के माध्यम से साम्राज्य का विस्तार किया।

HMT APBS
→ हैदराबाद = 1798
→ मैसूर = 1799
→ तंजौर = 1799
→ अवध = 1801
→ पेशवा = 1802
→ भोंसले = 1803
→ सिंधिया = 1804

सामाजिक कारण

1) 1813 के चार्टर एक्ट से ईसाई मिशनरी का भारत आगमन।
2) सामाजिक प्रथाओं और मूल्यों में हस्तक्षेप।
⇒ 1829 का सतीप्रथा निषेध (आर्य IT)
⇒

डलहौजी की
हड़प नीति :-

सतारा = 1848
जैतपुर, संभलपुर = 1849
बघाट = 1850
उदयपुर = 1852
झांसी = 1853
नागपुर = 1854
करौली = 1855
अवध = 1856

{ SJS
BUJ
NKA }

⇒ ठगी प्रथा निषेध (1830) – कर्नल स्लीमैन
⇒ विधवा पुर्नविवाह अधिनियम
⇒ शिशु हत्या निषेध
3) धार्मिक अयोग्यता अधिनियम (यह धर्मान्तरण को बढ़ावा देता था)

आर्थिक कारण

1) 1765 – 1772 तक बंगाल में द्वैध शासन रहा।
2) औपनिवेशिक प्रणाली

- 1757 – 1813 राजकोषीय विनियोग का दौर (साम्राज्यवाद)
- 1813 – 1858 मुक्त व्यापार का दौर / भारतीय बाजार एकाधिकार
- 1858 – 1947 वित्तीय पूंजीवाद का दौर

3) अधिकतम लूट का प्रभाव – भीषण अकाल, गरीबी, भुखमरी।
4) कृषि का वाणिज्यकरण किया गया।
5) राजस्व व्यवस्था किसानों के शोषण का पर्याय बनी रही।

सैनिक कारण

1) सैनिकों के साथ पक्षपात पूर्ण व्यवहार
⇒ अखाद्य भोजन
⇒ वेतन / भत्ता कम
⇒ रैंकिंग कम
② सामान्य सेवा भर्ती अधिनियम आया। (कैनिंग)
③ पोस्टल सेवा पर शुल्क आरोपित कर दिया।
④ धार्मिक चिन्हों व प्रतीकों की मनाही।

तात्कालिक कारण

1) ब्राउनबैस राइफल के स्थान पर इनफील्ड राइफल आयी। इसमें चर्बी वाले कारतूस लगते थे।

विद्रोह का प्रसार एवं शुरूआत :-

⇒ चर्बीवाले कारतूस के विरोध के परिणामस्वरूप विद्रोह की शुरूआत हुयी।

⇒ नई एनफील्ड राइफल का परिक्षण 3 स्थानों पर हो रहा था।
1) स्यालकोट (पंजाब)
2) दमदम (बंगाल)
3) अम्बाला (हरियाणा)

विरोध के स्वर यहीं से उठने शुरू हुये, परन्तु अंग्रेजों ने उन्हें दबा दिया।

⇒ 29 मार्च 1857 को 34वीं इंफेन्ट्री बटालियन के सैनिक मंगल पाण्डे ने इसका विरोध किया।

⇒ इन्होंने दो अंग्रेज अधिकारियों पर गोली मारकर हत्या कर दी।
1) ह्यूसहियर्स
2) जनरलबाघ

⇒ 8 अप्रैल 1857 को मंगल पांडे को फांसी दे दी गयी।

⇒ तिथि निर्धारित - 31 मई

⇒ प्रतीक चिह्न - कमल और रोटी

⇒ शुरुआत - 11 मई

⇒ मेरठ छावनी के सैनिक इस विद्रोह की शुरुआत करते हैं। ये दिल्ली पहुँच कर बहादुरशाह जफर को विद्रोह का नेता घोषित करते हैं, परन्तु वास्तविक नेतृत्व बख्त खां कर रहे थे।

इतिहास लेखन (1857 के विद्रोह से सम्बंधित):-

1) सर्वप्रथम सर सैयद अहमद खाँ (विद्रोह के समय बिजनौर में सदर अमीन के पद पर कार्यरत थे) ने 'Causes of Indian mutiny' नामक पुस्तक में इसे मात्र एक सैनिक विद्रोह कहा।

2). विनायक दामोदर सावरकर ने इसे भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम कहा। (मूलतः मराठी भाषा में थी)

3) स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद 1857 की क्रांति का आधिकारिक इतिहास लेखन का कार्य प्रारम्भ करवाया गया। सरकार ने R.C मजूमदार को चुना। इन्होंने "सिपॉय म्युटिनी एण्ड द रिवोल्ट ऑफ 1857" पुस्तक में इसे 'न तो प्रथम न ही राष्ट्रीय और न ही स्वतंत्रता संग्राम' कहा।

4) सुरेन्द्रनाथ सेन को सरकार ने आधिकारिक इतिहासकार चुना। इन्होंने "1857" नामक पुस्तक में इसे 'राष्ट्रीयता के अभाव में भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम' कहा।

Divvay Sir GS

अन्य पुस्तकें :-

1) SB Chaudhary – Civil Rebellion in the Mutiny.
2) Ashok Mehta – The Great Rebellion
3) Charles Balls – History of Indian Mutiny.

	प्रसार क्षेत्र	नेता	दमनकर्ता
1)	कानपुर	नाना साहेब	नील व कैम्पबेल
2)	झांसी	रानी लक्ष्मीबाई	जनरल ह्यूरोज
3)	अवध	बेगम हजरतमहल	कैम्पबेल
4)	दिल्ली	बहादुरशाह जफर (वास्तविक नेतृत्व – बख्त खां)	निकोलसन व हडसन
5)	जगदीशपुर / आरा	बाबू कुंवर सिंह	विलियम टेलर
6)	रूहेलखण्ड क्षेत्र (बरेली)	खान बहादुर खान	जनरल ह्यूरोज
7)	फैजाबाद	मौलवी अहमदुल्ला	कैम्पबेल
8)	मथुरा	देवीसिंह	
9)	असम	मणिरामदत्त	
10)	इलाहाबाद	लियाकतअली	कर्नल नील
11)	फतेहपुर	अजीमुल्ला	जनरल रेनर्ड
12)	गोरखपुर	गजाधर सिंह	
13)	मेरठ	राव कदमसिंह	

→ बनारस
इलाहाबाद

नाना साहेब :-
⇒ वास्तविक नाम – धुंधुपन्त
⇒ अंतिम पेशवा बाजीराव II के दत्तक पुत्र हैं।
⇒ बाजीराव II की मृत्यु के बाद अंग्रेजों ने नाना साहेब की पेंशन रोक दी।

रानी लक्ष्मीबाई :-
⇒ वास्तविक नाम – मणिकर्णिका
⇒ बचपन का नाम – मनु

Digvijay Sir GS

⇒ मुलतः बनारस की रहने वाली थी।
⇒ शादी झांसी के राजा गंगाधर राव के साथ हुयी।
⇒ 1853 में लॉर्ड डलहौजी की हड़पनीति के तहत झांसी का विलय कर लिया गया। (दत्तक पुत्र वैध उत्तराधिकारी नहीं होगा यह आरोप लगाकर)

बेगम हजरत महल:-

⇒ इन्हें 'महकपरी' के नाम से भी जाना जाता है।
⇒ अपने बेटे बिजरिस कादिर को नवाब बनाकर उसके संरक्षक के तौर पर शासन कर रही।
⇒ आउट्रम की रिपोर्ट के आधार पर अवध पर कुशासन का आरोप लगाकर उसे ब्रिटिश राज्य में विलय कर लिया जाता है।

प्रभाव:-

1) भारत शासन अधिनियम 1858 लाया गया।
2) ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी से भारत का प्रशासन छीनकर सीधे क्राउन ने अपने हाथों में ले लिया।
3) गवर्नर जनरल का पद अब वायसराय कर दिया गया।
4) अंग्रेज अब भारतीयों के सामाजिक व धार्मिक मामलों में कोई हस्तक्षेप नहीं करेंगें।
5) सेना में पहले अनुपात 5:1 था, उसे घटा दिया। पीलकमीशन के आधार पर यूरोपीय सैनिकों की संख्या बढ़ा दिया।
6) 1784 से भारत में चला आ रहा द्वैध शासन समाप्त हो गया।
7) भारत राज्य सचिव और उसकी परिषद की नियुक्ति की गयी।

Digvijay Sir GS

कांग्रेस से पूर्व राजनीतिक संगठन एवं कांग्रेस

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस से पूर्व राजनीतिक संस्थाएँ :-

1) वर्गीय हितों का प्रतिनिधित्व करती थी। ✓
2) बहुवर्गीयता का अभाव। ✓
3) इनमें क्षेत्रीय तत्वों को प्रधानता दी गयी थी। ✓
4) इनकी मांगे सीमित थी। ✓

① लैण्ड होल्डर सोसाइटी :- (LHS)

इसको आधुनिक भारत की प्रथम राजनीतिक संस्था माना जाता है।
✓ स्थापना – 1838 (कलकत्ता)
✓ संस्थापक – द्वारका नाथ टैगोर, प्रसन्न कुमार ठाकुर, राधा कान्तदेव।

Note – बंगहित प्रकाशिनी संस्था (1837) – संस्थापक = द्वारका नाथ टैगोर।

② बंगाल ब्रिटिश इंडियन एसोशिएसन :- (BBIA)

स्थापना – 20 अप्रैल 1843 (कलकत्ता)
अध्यक्ष – जॉर्ज थॉमसन (अंग्रेज)
सचिव – प्यारे चन्द्र मित्र (भारतीय)
मुख्य उद्देश्य – अंग्रेजों के अधीन भारत के लोगों की वास्तविक दशा के बारे में जानकारी प्राप्त करना।

③ ब्रिटिश इंडियन एसोशिएसन :- (BIA) = LHS + BBIA

स्थापना – 28 अक्टूबर 1851 (कलकत्ता)
संस्थापक सदस्य – राजेन्द्र लाल मित्र और राधा कान्त देव, हरिश्चन्द्र मुखर्जी। ✓
उद्देश्य – भारतीयों के हितों की मांग करना अंग्रेजों से।
ये लैण्ड होल्डर सोसाइटी + बंगाल ब्रिटिश इंडियन एसोशिएसन को मिलाकर बनी।

④ ईस्ट इण्डिया एसोसिएसन :-

संस्थापक – दादा भाई नौरोजी
स्थापना – 1866 (लंदन)
उद्देश्य – तत्कालीन भारतीय समस्याओं पर विचार करना एवं ब्रिटिश जनमत को प्रभावित करना।

⑤ इण्डियन एसोसिएसन :-

स्थापना – 26 जुलाई 1876 (कलकत्ता)
संस्थापक – सुरेन्द्र नाथ बनर्जी एवं आनंद मोहन बोस।
उद्देश्य – सिविल सेवा प्रणाली में सुधार करना एवं अधिक से अधिक भारतीयों को प्रतिनिधित्व प्रदान करना।

⑥ इण्डियन लीग / टेम्पुल लीग :-

स्थापना – 1875 (कलकत्ता)
संस्थापक – शिशिर कुमार घोष
उद्देश्य – लोगों में राष्ट्रवाद की भावना को जाग्रत करना एवं राजनीतिक शिक्षा को प्रोत्साहित करना।

⑦ पूना सार्वजनिक सभा :-

स्थापना – 2 अप्रैल 1870 (पूना)
संस्थापक – महादेव गोविन्द रानाडे।
उद्देश्य – लोगों में राजनीतिक चेतना को जगाना एवं जनता व सरकार के मध्य मध्यस्थता करना।

⑧ मद्रास महाजन सभा :-

स्थापना – 16 मई 1884 (मद्रास)
संस्थापक – वी राघवाचारी, एस सुब्रह्मण्यम, पी. आनन्द चार्लू।
उद्देश्य – स्थानीय संगठन एवं संस्थाओं के कार्यों को संगठित करना।

⑨ बाम्बे प्रेसीडेन्सी एसोसिएसन :-

स्थापना – 1885 (बम्बई)
संस्थापक सदस्य – फिरोज शाह मेहता, बदरुद्दीन तैयब जी, के. टी. तेलंग।
उद्देश्य – भारत में सिविल सेवा को आयोजित कराने के लिए। सरकारी पदों पर भारतीयों की नियुक्ति।

इण्डियन एसोसिएसन :-

संस्थापक – एस एन बनर्जी
सचिव – आनंदमोहन बोस।

⇒ 1883 में कलकत्ता में अखिल भारतीय सम्मेलन का आयोजित किया जाता है। यह 'नेशनल कांफ्रेंस' का पहला सम्मेलन था।

Digvijay Sir GS

⇒ इस सम्मेलन की अध्यक्षता राम तनु लाहणी ने की है।
⇒ मुख्य उद्देश्य – राष्ट्रवादी शक्तियों को एकजुट करना।
⇒ 1885 में इसका दूसरा सम्मेलन आयोजित किया गया। बम्बई में इसी समय कांग्रेस का प्रथम सम्मेलन आयोजित किया जा रहा था, इसी कारण एस. एन. बनर्जी कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन में भाग नहीं ले सके।

कांग्रेस की स्थापना

⇒ स्थापना – 1885
⇒ संस्थापक – ए ओ ह्यूम (एलन ओक्टेवियन ह्यूम) – कृषि विभाग में सचिव के पद पर थे।
⇒ कांग्रेस की स्थापना के समय वायसराय या गवर्नर जनरल लार्ड डफरिन था।
⇒ 1884 में ह्यूम ने भारतीय राष्ट्रीय संघ की स्थापना की और यहीं आगे चलकर कांग्रेस की अग्रदूत बनी।

① प्रथम अधिवेशन – (1885 – बम्बई)
⇒ बम्बई के तेजपाल गोकुलदास संस्कृत विद्यालय में हुआ।
⇒ अध्यक्षता – W C बनर्जी (व्योमकेश चन्द्र बनर्जी)
⇒ इस अधिवेशन में 72 प्रतिनिधियों ने भाग लिया था।
⇒ यह अधिवेशन पूना में होना था, परन्तु वहां प्लेग फैला होने के कारण इसे बम्बई में आयोजित किया गया।
⇒ दादा भाई नौरोजी के सुझाव पर इसका नाम बदलकर 'भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस' कर दिया गया।
प्रमुख प्रतिनिधि – फिरोज शाह मेहता, दादा भाई नौरोजी, दिनशावाचा, वी. राघावाचारी, एस. सुब्रह्मण्यम।

② दूसरा अधिवेशन – (1886 – कलकत्ता)
अध्यक्ष – दादा भाई नौरोजी
⇒ इस सम्मेलन में एस. एन. बनर्जी ने भाग लिया एवं नेशनल कांफ्रेंस का विलय इण्डियन नेशनल कांग्रेस में कर दिया।

③ तीसरा अधिवेशन (1887 – मद्रास)
अध्यक्षता – बदरूद्दीन तैयब जी।
⇒ यह प्रथम मुस्लिम बने जिन्होंने कांग्रेस के अधिवेशन की अध्यक्षता की।

④ चौथा अधिवेशन – (1888-प्रयागराज)

अध्यक्षता – जॉर्ज यूल

⇒ ये कांग्रेस की स्थापना करने वाले प्रथम अंग्रेज थे।

सुरक्षा कपाट सिद्धान्त (safety Valve)

⇒ लाला लाजपत राय ने दिया था। ✓

⇒ यह सिद्धान्त पहली बार 'यंग इंडिया' नामक पुस्तक में प्रकाशित हुआ।

Digvijay Sir GS

Thank you